IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

काशी क्षेत्र की मूर्तिकला में कार्तिकेय : एक पुनरावलोकन

विवेक शुक्ल (शोधार्थी), डॉ0 बीरेन्द्र मणि त्रिपाठी (सह–आचार्य)
नेहरु ग्राम भारती
मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सारांश–:

प्रस्तुत शोध आलेख में काशी क्षेत्र से प्राप्त कार्तिकेय प्रतिमाओं का प्रतिमाशास्त्रीय एवं कलात्मक पुनरावलोकन किया गया है। इस आलेख में कार्तिकेय की मूर्तियां जो विशेष रूप से काशी के भारत कला भवन, सारनाथ पुरातत्व संग्रहालय, आदिकेशव घाट, तुलसी घाट, ब्रह्म घाट, गाय घाट, भोंसला घाट, तिलभाण्डेश्वर मंदिर, त्रिलोचन महादेव मन्दिर इत्यादि से प्राप्त को विवेचन का मुख्य विषय बनाया गया है। इन मूर्तियों के निर्माण की योजना, साहित्यिक आधार व कलात्मक वैशिष्टता को सांस्कृतिक सन्दर्भ में देखने का प्रयास है। ब्राह्मण देवमण्डल में कार्तिकेय का प्रमुख स्थान है। सोम–स्कन्द के रूप में शिव परिवार के साथ एवं परवर्ती काल में स्वतंत्र रूप से उनका अंकन मूर्तिशिल्प में किया गया। उनके साथ उनके वाहन मयूर का भी भव्य, अप्रतिम अंकन इस प्रकार से हुआ है जैसे उनके हाथ के फल को वह सद्यः प्राप्त कर लेगा।

प्रस्तावना –:

कार्तिकेय ब्राह्मण देवमण्डल में प्रधान देव माने गये हैं। शिवपुराण तथा मत्स्यपुराण के अनुसार कार्तिकेय शिव व उमा के पुत्र थे तथा उन्होंने तारकासुर के वध हेतु जन्म लिया था। शिवपुराण में कार्तिकेय को युध्द विशारद तथा एक कुशल पराक्रमी योध्दा के रूप में चित्रित किया गया है।[1] कार्तिकेय के विविध नाम हमें साहित्यिक स्त्रोंतो में प्राप्त होते हैं। यथा – कुमार, स्कन्द, देवसेनापति, महेशान, गांगेय, शिवसुत, षडानन इत्यादि नामों से जाने जाते हैं।[2] कार्तिकेय के विविध नामों के संबध में प्रख्यात कला इतिहासकार वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार देवसेना का पति, अग्नि का पुत्र और गंगा का पुत्र विराट प्राण या जीवन तत्व का प्रतीक है, और इसी की संज्ञा स्कन्द है।[3] स्कन्द शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख पतंजलि के महाभाष्य में हुआ है। श्रीमद् भगवद्गीता में श्रीकृष्ण स्वंय को सेनापतियों में स्कन्द बताते है।

कार्तिकेय के जन्म कथानक को महाकवि कालिदास ने अपने ग्रंथ कुमारसंभव का आधार भी बनाया था। महाभारत में उन्हें अग्नि का पुत्र कहा गया है। मत्स्य पुराण एवं महाभारत के अनुसार कार्तिकेय का जन्म सप्तऋषियों में से छः ऋषिपत्नियों या कृतिकाओं के सूर्याग्नि से सम्पर्क के कारण हुआ था। छः माताओं से स्तनपान करने के लिए उनके छः मुखो की कल्पना की गयी है। इसी से इन्हें षण्मातुर व षडानन (षण्मुख) भी कहा गया है।[4]

स्वतंत्र रूप से स्कन्द का नामोल्लेख छान्दोग्य उनिषद् और अथर्ववेद के एक परिशिष्ट के रूप में स्कन्दयाग या धूर्तकल्प में होता है। जहां स्कन्द को "भगवान देवो धूर्तः (धूर्तों और चोरों का देवता) माना गया है।[5] ऋगवेद में कार्तिकेय का नाम 'कुमार' मिलता है और उनका सम्बन्ध अग्नि से बताया गया है।[6]

स्कन्द नाम उत्तरवैदिक काल में लोकप्रिय हुआ। कालान्तर में सनत, विशाख, जयन्त, महाजयन्त, महासेन, लोहितगात्र, धूर्त नाम इनके साथ जुड़ते रहे। दक्षिण भारत में इन्हें सुब्रह्मण्यम के नाम से जाना जाता है। [7] कार्तिकेय देव सेनापति होने के कारण युध्द विद्या में निपुण थे। सर्वप्रथम हमें कुषाण शासक हुविष्क के सिक्कों पर स्कन्द, कुमार, विशाल और महासेन आदि रूपों का उल्लेख हुआ है। यौधेय गणराज्य ने अपने सिक्कों पर विशेष रूप से उनका अंकन किया था। इन सिक्कों पर उन्हें षष्टमुख रूप में शक्ति लिए प्रदर्शित किया गया है।[8] गुप्तकाल में कुमारगुप्त प्रथम के सिक्कों पर स्कन्द और उनके वाहन मयूर का अंकन हुआ है।[9] भीटा और बसाढ़ से प्राप्त मिट्टी की मुहरों पर 'स्कन्दशूरस्य' शब्द उत्कीर्ण है।[10]

पतंजलि के महाभाष्य में स्कन्द तथा विशाख को पृथक देवता माना गया है। विशाख को स्कन्द का सहयोगी बताया गया है।[11] मार्कण्डेय पुराण[12] विशाख को देवी के दायें भाग से उत्पन्न बताया है। वहीं रामायण में विशाख को स्कन्द का भाई कहा गया है।[13] कार्तिकेय की प्रतिमा का रूप व स्वरूप कैसा होना चाहिए के संबंध में सबसे पहले वराहमिहिर की वृहत्संहिता में विवरण प्राप्त होता है।[14] यहां इन्हें बालक के रूप में चित्रित करने की बात कही गयी है। मोर एवं शक्ति इनके अंग बताये गये हैं। इस संबंध में विष्णुधर्मोत्तर पुराण[15] में उनका छः मुख, चार हाथ तथा लाल वस्त्र धारण किए, मयूर पर आसीन बताया गया है। उनके दाहिने हाथ में कुक्कुट और घण्टा तथा बायें हाथ में विजय ध्वज और शक्ति होना बताया गया है। वहीं समरांगणसूत्र [16] में कार्तिकेय को सूर्य के समान तेजस्वी रक्तवर्ण का वस्त्र धारण किए, अग्नि की प्रभा के समान कान्तिमान, षष्टमुखी अथवा एक मुखी मुकुट, मणि, हार, इत्यादि से अलंकृत प्रसन्न मुद्रा में यौवन सम्पन्न कुमार के रूप में वर्णित किया गया है। स्कन्द की द्वादशभुजी मूर्ति को मुख्य नगर में, षड्भुजी अथवा चर्तुभुजी मूर्ति को उपनगर में तथा द्विभुजी मुर्ति को साधारण ग्राम में स्थापित करने का निर्देश है।[17]

वायुपुराण में कार्तिकेय के वाहन मोर, उनके छः मुखों और बारह नेत्रों का उल्लेख किया गया है। अपराजितपृच्छा[18] में षडमुखी कार्तिकेय को द्वादशभुजी, त्रिनेत्री व मोरवाहना बताया गया है। उनके हाथों में जलपात्र, ढ़ाल, पाश, धनुष, श्रृंग, वरदमुद्रा, बाणशक्ति, तलवार, अंकुश, दण्ड और अक्षसूत्र अंकन का विधान है। रूपमंडन में भी इन्हीं लक्षणों को स्वीकार किया गया है।

मूर्तिकला में कार्तिकेय के अंकन का साहित्यिक साक्ष्य तो पतंजलि के महाभाष्य में मिलता है परन्तु इस काल की मूर्ति अभी तक प्राप्त नहीं हुई है।[19] कार्तिकेय की प्रतिमा का निर्माण कुषाण काल से प्रारंभ होता है। मथुरा एवं गांधार कला इसकी साक्षी हैं। मथुरा से प्राप्त कार्तिकेय मूर्ति में एकमुखी देवता को अभय मुद्रा तथा शक्ति के साथ बिना वाहन के दिखाया गया है। गठन के आधार पर प्रख्यात कला इतिहासकार वासुदेवशरण अग्रवाल इन्हें बोधिसत्व की मूर्तियों से प्रेरित मानते है।[20] देवता वाहन के रूप में कभी कुक्कुर तो कभी मयूर का अंकन है। गुप्तकाल तक कार्तिकेय का मयूर के साथ घनिष्ठ संबंध दिखलाई देने लगता है।[21] परवर्ती गुप्तकाल एवं बाद के

कालों मे मंदिरों में शिव–पार्वती के साथ विशेष रूप से कार्तिकेय का भी अंकन हुआ है। पल्लव काल में सोम स्कन्द की मूर्तियों का पैनल हमें दिखाई देता है।[22] बाद के काल में कार्तिकेय की प्रतिष्ठा एक प्रमुख देव के रूप में स्वतंत्र रूप से दिखाई देती है।

मूर्तिशिल्प में–

कार्तिकेय की मूर्ति का निर्माण मुख्य रूप से दो प्रकारों में हुआ –

1–स्थानक कार्तिकेय मूर्ति

2–आसन कार्तिकेय मूर्ति

कुछ मूर्तियों में उन्हें षष्ठानन तथा कुछ मूर्तियों में उन्हें केवल एकमुखी बनाया गया है। वहीं कुछ मूर्तियों में दो भुजाएं तो कुछ में चार से बारह भुजाएं तक प्राप्त होती हैं। स्थानक मूर्ति में चार हाथ तथा मयूर पर बैठी मूर्ति को षष्ठभुजी, अष्टभुजी एवं द्वादश भुजी होना चाहिए। आसन मूर्ति के संबंध में कहा गया है कि आसन मूर्ति में दो हाथ होने चाहिए। उनके हाथों में शक्ति, धनुष, बाण, तलवार, मुगदर, हथौड़ा, विजय ध्वज, घण्टा, खेटक मुर्गा, कमण्डल, पक्षी तथा शेष संवर्धन मुद्रा में दिखाई पड़ते हैं। काशी क्षेत्र से प्राप्त कार्तिकेय प्रतिमाओं को दो भागों में बांटा जा सकता है–

1–आसन

2–स्थानक

काशी के भारत कला भवन में कार्तिकेय की एक अत्यंत मनोहारी अप्रतिम मूर्ति (चित्र सं0 –1) प्रदर्शित है। यह मूर्ति गुप्तकाल की है जो लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है। इस मूर्ति में कार्तिकेय के दो हाथ हैं और वे महाराजलीलासन में मयूर पर विराजमान हैं। उनके दायें हाथ में फल है निचे मोर अपने चोंच से स्पर्श कर रहा है। बायें हाथ में शक्ति लिए हुए प्रदर्शित है। जिस मयूर पर विराजमान हैं। वह अपना पंख फैलाये हुए है, जिससे देवता के पीठ के पीछे भव्य प्रभामंडल का दिग्दर्शन हो रहा है। कार्तिकेय के मस्तक पर पट्ट बंधा है तथा खुले हुए केश कन्धे तक लट रहे हैं। देवता की मुखाकृति सौम्य है तथा वे कर्ण में बड़े कुंडल, गले में बघनखहार, सुन्दर भुजवंद, कंकण व धाती धारण किए हुए है।

<u>स्थानक कार्तिकेय मूर्तिः–</u>

काशी में भारत कला भवन में प्रदर्शित चौथी शताब्दी ई0 की एक अप्रतिम स्थानक मूर्ति (क्रम संख्या – 206, चित्र संख्या–2) है जो लाल बलुए प्रस्तर से निर्मित है। इस मूर्ति का आकार 29x33x8 सेमी है। यह मूर्ति एक प्रस्तर प्रकोष्ठ में बनी है। इसमें कार्तिकेय शक्ति युक्त है एवं दो भुजाओं वाले अभंग मुद्रा में खड़े प्रदर्शित हैं। उनके पीछे पंख फैलाये मयूर का अंकन है जिसे दाहिने हाथ से वे कुछ खिला रहे हैं।

काशी के सारनाथ पुरातत्व संग्रहालय जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के नियंत्रणाधीन है में उत्तर मध्यकाल से सम्बध्द एक चर्तुभुजी कार्तिकेय मूर्ति (क्रम संख्या–534, चित्र सं0 3) में है। इस मूर्ति में कार्तिकेय त्रिभंग मुद्रा में खड़े प्रदर्शित है। उनके हाथों में क्रमशः अक्षसूत्र, शक्ति, पट्टीश तथा वरद मुद्रा का प्रदर्शन है।

सम्पूर्ण प्रतिमा बलुआ पत्थर के सक पट्ट पर उकेरी गयी है जिसमें देवता लम्बा मुकुट कर्ण कुंडल, हार, यज्ञोपवीत्, कटिमेखला, भुजबंद, कंकण, धोती तथा नुपुरादि धारण किए हुए हैं। देवता के पैरों के पार्श्व में वाहन के रूप में कुक्कुट का प्रदर्शन है।

कार्तिकेय की अन्य मूर्तियां काशी के विभिन्न स्थानों से मिली हैं यथा आदिकेशव घाट (8वीं शताब्दी ई0), तुलसीघाट (अमरेश्वर मन्दिर–9वी–10वी शताब्दी ई0), सारनाथ संग्रहालय (दो मूर्तियां–क्रमांक–624, क्रमांक–534 ई0, 10वी एवं 14वीं शती ई0) ब्रह्मघाट
(11 वीं शताब्दी ई0) गायघाट (शीतलामन्दिर, 12वीं शताब्दी) त्रिलोचन महादेव मन्दिर (12वीं शताब्दी ई0) भोंसला घाट (अश्विनीकुमार मन्दिर, 13वीं शताब्दी ई0)

आदिकेशव घाट[23] से प्राप्त लगभग 8वीं शताब्दी ई0 की मयूर पर सवार द्विभुजीय कार्तिकेय की संभवतः गेरु रंग से रंगी हुई मूर्ति में कार्तिकेय के दाहिने हाथ में फल तथा वाम हाथ में शूल प्रदर्शित है। (चित्र सं0–4) तुलसी घाट[24] पर अमरेश्वर मन्दिर[25] में मयूर पर आरूढ द्विभुजी कार्तिकेय की मूर्ति है जिसमें उनके आयुध स्पष्ट नहीं है। द्विभंग मुद्रा में ही कार्तिकेय की एक अन्य मूर्ति ब्रह्मा घाट[26] से प्राप्त हुई है जिसमें बाएं हाथ में कार्तिकेय शूल लिए प्रदर्शित है। (चित्र सं0– 5) सारनाथ संग्रहालय में संरक्षित 10वी शताब्दी ई0 की है जिसमें कार्तिकेय ललितासन में बैठे हुए है (क्रमांक 624) वे बायें हाथ में शूल लिए हुए हैं। (चित्र–सं0–06) 14वीं शताब्दी की एक अन्य चतुर्भुज मूर्ति सारनाथ संग्रहालय में है, जिसमें कार्तिकेय तीन हाथों में फल, शूल, पुस्तक हैं जबकि एक हाथ वरद मुद्रा में है। कार्तिकय के पार्श्व में मयूर वाहन प्रदर्शित है, जो स्वामी के हाथ के फल को प्राप्त करने के लिए उत्सुक है।

कार्तिकेय–आयुध और वाहन–:

शूल (शक्ति) शक्ति या शूल सेनापति कार्तिकेय की शक्ति को प्रकट करता है। इसी शूल से ये शक्तिधर कहलाते हैं। आयुध के रूप में शूल का सर्वप्रथम वर्णन षड्विश बाह्मण में शिव अस्त्र के रूप में हुआ है। यह शूल कार्तिकेय को भगवान शिव से प्राप्त हुआ था। यह शूल लौह निर्मित, तेजधार वाला व षट्कोणीय होता है तथा अस्त्र एवं शस्त्र दोनों ही श्रेणी में मान्य है। ऋगवेद और शतपथ बाह्मण में शूल को मांस भुनने वला उपकरण बताया गया है।

उपसंहार–:

कार्तिकेय की मूर्तियों के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि इनमें लक्षणात्मक एकता के तत्व प्रदर्शित होते हैं। काशी क्षेत्र से प्राप्त कार्तिकेय की मूर्तियों में हमें कलात्मक एकरूपता के तत्व दिखाई देते हैं। समय के साथ लक्षणात्मकता और समृध्द होती गयी। इन मूर्तियों का निर्माण आदर्श प्रामाणिक साहित्य ही रहे। प्रारम्भिक अवस्था में बृहत्संहिता एवं परवर्ती काल में रूपमण्डन एवं अपराजितपृच्छा इन मूर्तियों के निर्माण आदर्श स्थापित करती रही।

संदर्भ–:

1. कुमार, विनय, शिव पुराण, डायमंड बुक्स प्रकाशन, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली, 1998 पृ0सं0–27
2. विल कीन्स, डब्ल्यू.जे. हिन्दू माइथोलॉजी, रूपा प्रकाशन, दिल्ली, 2015, पृष्ठ सं0 276–82
3. अग्रवाल, पी.के0, स्कन्द कार्तिकेय, बी.एच.यू. प्रकाशन, वाराणसी, 1967 परिशिष्ट, पृष्ठ संख्या 104
4. सहाय, भगवंत, आइकनोग्राफी ऑफ माइनर हिन्दू एण्ड बुध्दिष्ट डिटिज, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ– 27
5. अग्रवाल, पी0के0, स्कन्द कार्तिकेय, बी.एच.यू. प्रकाशन, वाराणसी, 1967, पृष्ठ– 103
6. वही, अध्याय 1–3, पृष्ठ–37
7. जोशी, नीलकंठ, प्रसाद, प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, विहार राष्ट्रभाषा प्रकाशन, पटना, 2000, पृष्ठ 149
8. जोशी, नीलकंठ, प्रसाद, प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, विहार राष्ट्रभाषा प्रकाशन, पटना, 2000, पृष्ठ 150
9. कैटलाग ऑफ द क्वायन् ऑफ द गुप्ता डायनेस्टी एण्ड ऑफ शशांक इन द ब्रिटिश म्यूजियम, प्लेट XV पृष्ठ 5–11
10. जोशी, नीलकंठ प्रसाद, वही, पृष्ठ–105
11. शास्त्री, प्रदीप कुमार, महाभाष्यम, रामलाल कपूर प्रकाशन, दिल्ली, 2021, पृष्ठ 136
12. अग्रवाल, वासुदेव शरण, मार्कण्डेय पुराण एक सांस्कृतिक अध्ययन, हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण, 2010, पृष्ठ–123
13. राजस्वी, एम. आई., रामायण, फिंगरप्रिन्ट प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृ0–131
14. झा, अच्युतानंद, बृहत्संहिता, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, 2011, पृ0 –41
15. द्विवेदी, शिव प्रसाद, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, 2016, पृ0–38
16. शर्मा, श्रीकृष्ण, समरांगणसूत्रधार, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 2011, पृ0–77
17. श्रीवास्तव, बृजभूषण, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2015, पृ0–38
18. सिंह, श्रीकृष्ण जुगनु, अपराजितपृच्छा, प्रमिला, प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ0–123
19. किलहार्न, एफ0, महाभाष्य आफ पतंजलि, वा02, भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे, 1996, पृष्ठ–429
20. अग्रवाल, वासुदेवशरण, भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन नगवा, वाराणसी, 1996, पृ0 सं0– 270
21. अग्रवाल, वासुदेवशरण, वही, पृ0 268
22. राव, गोपीनाथ, एलीमेंट्स ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी जिल्द –2, भाग–2, द्वितीय संस्करण, वाराणसी, 1971, पृष्ठ–415
23. तिवारी, मारुतिनन्दन प्रसाद, काशी की प्राचीन देवमूर्तियां कलात्मक एवं लक्षणपरक अध्ययन, इन्दिरा

गांधी राष्ट्रीय कलाकेन्द्र, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली, 2021, पृ0–83

24. तिवारी, मारुतिनन्दन प्रसाद, वही, पृ0–83

25. तिवारी, मारुतिनन्दन प्रसाद, वही, पृ0–83

26. तिवारी, मारुतिनन्दन प्रसाद, वही, पृ0–83

चित्र संख्या–1

कार्तिकेय, भारत कला भवन (क्रमांक 156), 5वी शताब्दी ई0

चित्र संख्या–2

कार्तिकेय, भारत कला भवन (क्रमांक 206), चौथी शताब्दी ई0

चित्र संख्या–3

कार्तिकेय, सारनाथ पुरातत्व संग्रहालय (क्रमांक 534), 14वीं शती ई0

चित्र संख्या–4

कार्तिकेय, आदिकेशव घाट, काशी, 8वीं शताब्दी ई0

चित्र संख्या–5

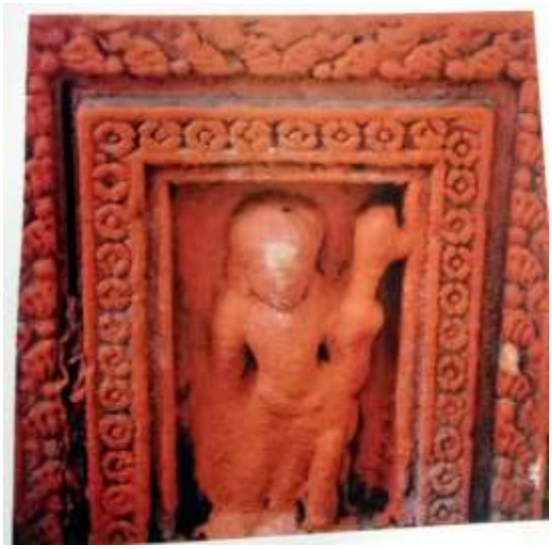

कार्तिकेय, ब्रह्मा घाट, ग्यारहवीं शताब्दी ई0 काशी

चित्र–सं0–06

कार्तिकेय (चौमुखी में) सारनाथ संग्रहालय 10वीं शताब्दी ई0